Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुवाद का स्वरूप एवं सैद्धांतिक विवेचन

विजया माणिक पाटील
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापूर

वर्तमान में अनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया हैं।विश्व को एक करने में मानव- मानव को एक दूसरे के समीप लाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। अनुवाद को एक साहित्यिक विधा के रूप में जानने लगे हैं।मनुष्य के विचार विनिमय का सर्वोत्तम साधन भाषा है। आज के युग में काफी विकास हुआ है। मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए, संप्रेषण के माध्यम के लिए भाषा का निर्माण किया है ।ध्वनि प्रतिक के रूप में भाषा को जानते हैं ,समझते हैं ।हर क्षेत्र के भाषिक समुदाय ने अपने-अपने ध्वनि प्रतिक का निर्माण कर, अपने विचारों को स्पष्ट करने का साधन भाषा चुना है। भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। हर भाषा की अपनी संरचना होती हैं। अपने ध्वनि प्रतीक होते हैं।

'यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है कि मनुष्य को परस्पर विभाजित करने वाली शक्तियों में भाषाओं की अनेकता की अहम भूमिका हैं।'भाषाओं कीअनेकता' ,'मनुष्य को एक दूसरे से अलग ही नहीं करती उसे कमजोर ,ज्ञान की दृष्टि से निर्धन और संवेदन शून्य भी बनती हैं । अपने देश को ही ले यदि हमारे यहाँ इतनी भाषण न होती तो राष्ट्रीय एकता की समस्या इतनी जटिल न होती जितनी कि आज हैं।१

अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए एक से अधिक भाषाओं को जानना या समझना महत्वपूर्ण हो गया हैं। लेकिन हर किसी के लिए प्रत्येक भाषा को जानना या समझना संभव नहीं हैं। इसी कारण अनुवाद में मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान निर्माण किया हैं। दूसरी भाषाओं के साहित्य का ज्ञान हम प्राप्त कर सके, विदेशी साहित्य जान सके या हमारा भारतीय साहित्य पूरे विश्व में प्रसारित हो ,इसलिए अनुवाद की भूमिका मनुष्य

के जीवन में अहम बन गई हैं। सिर्फ एक भाषा को दूसरी भाषा में ले जाना अनुवाद नहीं होता हैं। मूल भाषा के भावों को, विचारों को रूपांतरित भाषा में इसी भावों के साथ व्यक्त करना अनुवाद होता हैं। यह कार्य इतना सरल नहीं है जितना हम समझते हैं।प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना होती है। व्याकरणिक दृष्ट्या हर भाषा अलग हैं।उसी भाषा के क्षेत्र में प्रचलित शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ होती हैं। इन सभी चीजों को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाता हैं। कारण रूपांतरित भाषा के अर्थ में ,भावों में कोई बदलाव न आए।

वर्तमान युग में अनुवाद का महत्व और उपयोगिता केवल भाषा और साहित्य तक सीमित नहीं हैं।वह हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय सहंति और ऐक्य का माध्यम है, जो भाषायी सीमाओं को पार करके भारतीय चिंतन और साहित्य की सृजनात्मक चेतना की समरूपता के साथ-साथ वर्तमान तकनीकी और वैज्ञानिक युग की अपेक्षाओं की पूर्ति कर हमारे ज्ञान- विज्ञान के आयामों को देश-विदेश से संपृक्त् करती हैं। आज अनुवाद के विषय में इतालवी भाषा के इस कथन के अनुपयुक्त आक्षेप की सारहीनता स्वयं सिद्ध हैं ।आज कोई यह स्वीकार नहीं करता कि अनुवादक निरर्थक हैं। यह सही है की भाषा शास्त्री आज भी अनुवाद को दुरुह और दुष्कर बताते हैं। इससे उसकी महत्ता क्षीण नहीं होती ।अनुवाद प्रक्रिया विवादास्पद हो सकती हैं पर निष्प्रयोजन और निरर्थक नहीं।२

अनुवाद आधुनिक युग की मांग की ऊपज हैं। अनुवाद एक साहित्यिक विधा हैं।अनुवाद के लिए दो भाषाओं की आवश्यकता होती हैं। इन दोनों भाषाओं को अनुदान विज्ञान में स्तोत्र भाषा और लक्ष्य भाषा की संज्ञा दी गई हैं।जिस भाषा की सामग्री अनूदित की जाती है वह स्रोत भाषा कहलाती हैं, और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाषा कहलाती हैं । अनुवाद मानव की मूलभूत एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण रहा है जागतिक स्तर पर संस्कृति के निर्माण में विचारों के आदान-प्रदान का बड़ा महत्व है हैं और यह महत्व अनुवाद से ही संभव हुआ हैं। वास्तव में अनुवाद में एकरूपता नहीं आ सकती। किसी भी दो भाषाओं की इकाइयाॅ एक जैसी नहीं होती और न हो सकती हैं ।उनमें एकता न होती है और न ही प्रयत्न करने पर लाई

जा सकती हैं। हिंदी भाषा की व्याकरण संरचना अलग होती है और अंग्रेजी भाषा की अलग होती हैं। इसलिए अनुवाद के समय दोनों भाषाओं के वाक्य रचना में अंतर होता हैं।

अनुवाद का सैध्दांतिक पक्ष भी जानना जरूरी होता हैं। वस्तुतः अनुवाद सिद्धांत कोई विशिष्ट धारा नहीं है बल्कि विभिन्न विभिन्न तज्ञों ने अनुवाद के संबंध में जो नियम बनाये हैं ,वह अनुवाद के सिद्धांत कहलाए जाते हैं। अध्ययन,सर्वेक्षण, परीक्षण, लेखन चिंतन की प्रक्रिया चल रही हैं उसमें अनुवाद क्षेत्र विस्तृत हो रहा हैं। जिसमें शोध समीक्षा मूल्यांकन एवं विविध कार्य क्षेत्र को संपन्न करने के लिए अनुवाद का होना अनिवार्य है हैं।जिस समाज ने और राष्ट्रने अनुवाद को जितना अधिक महत्व दिया है उतना ही अनुवाद को ऊंचाई प्राप्त हुई हैं। अनुवाद ने केवल भारत देश को जोड़ा नहीं है, तो विदेश को भी नजदीक लाने का कठिन काम किया हैं।

'वस्तुतः किसी भी विषय का तात्विक अथवा सैद्धांतिक अध्ययन उस विषय को अपनी सीमा में वैज्ञानिकता प्रदान करने में सहायक बनता हैं। अनुवाद विषय को इन दिनों में 'अनुवाद विज्ञान' माना जाने लगा हैं ।इसका मूलभूत कारण यही है कि सफल एवं श्रेष्ठ अनुवाद के अपने तत्व हैं ।यहां हम उन तत्वों पर प्रकाश डालते हैं जो किसी भी अनुवाद को सफल एवं श्रेष्ठ बनने के लिए आधारभूत एवं सहाय्यभूत होते हैं।'[3]
अनुवाद का सैद्धान्तिक विवेचन एक जटिल और कठिन क्षेत्र हैं।जो विज्ञान और कला के चौराहे पर बैठता है ।अनुवाद का भाषाई सिद्धांत, भाषाओं और संस्कृतियों के बीच अंतर कम करते हुए मूल भाषा का सार और भाव को एक भाषा से दूसरी भाषा में व्यक्त करता हैं। अनुवाद के अंतर्गत दो भाषाओं को होना जरूरी होता हैं। एक स्रोत भाषा और दूसरी लक्ष्य भाषा। यह अनुवाद का पहला और महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। शेष सारे सिद्धांत इसी से जुड़े हैं।

अनुवाद विज्ञान में संदर्भ, व्यंजना, अभिव्यक्ति को दृष्टि में रखकर अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करना समतुल्यता का सिद्धांत हैं।अर्थात अनुवाद में समतुल्यता का होना अनिवार्य होता हैं। मूल भाषा

की अभिव्यक्ति समान रूप में रूपांतरित भाषा में होनी चाहिए ।अनुवाद न अधिक होना चाहिए और न कम।' इस मत को माननेवाले यह मानते हैं कि शब्द का कोई अर्थ नहीं होता बल्कि शब्द के समतुल्य अभिव्यक्ति होती हैं। वह पर्याय होता हैं। वाॅटर (water)का अर्थ जल नहीं बल्कि जल, वॉटर का समतुल्य शब्द हैं। ४ किन्हीं दो भाषाओं के शब्द, वाक्य- विन्यास आदि एक समान नहीं होते। एक ही अर्थ के बोध कराने वाले शब्द दूसरी भाषा में अनुदित होने पर अर्थांतरण करने लगते हैं इसीलिए मूल सामग्री और अनुदित सामग्री एक जैसी नहीं होती हैं। भाषाओं की पारस्परिकता समतुल्य होती हैं इसलिए अनुवाद भी समतुल्य होते हैं।

अनुवाद के इस अभिलक्षण को कैटफोर्ड और नईडा समझा। कैटफोर्ड कहते हैं "अनुवाद एक भाषा की पाठ्य सामग्री दूसरी भाषा की पाठ्य सामग्री के रूप में समतुल्यता के आधार पर प्रतिस्थापन हैं।"5

कैटफोर्ड ने अनुवाद में समतुल्यता को महत्व दिया लेकिन अनुवाद की बारीकियाँ उसमें स्पष्ट नहीं हुई। इसका श्रेय नाइडा को मिला। उन्होंने अपने चिंतन में यह स्वीकार किया कि अनुवाद का संबंध स्तोत्र भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा में निकटतम स्वाभाविक पाठ प्रस्तुत करने से होता है हैं ।स्पष्ट है कि कैटफोर्ड जहाँ पाठ सामग्री की समतुल्यता चाहते थे वही नाइडा पाठ में निहित अर्थ और उनकी शैली पर बल देते थे ।अनुवाद में भाषाओं में अंतर के कारण कथन में समरूपता का निर्वाह नहीं होता बल्कि समतुल्यता ही होती हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में व्याख्या सिद्धांत का अपना अलग ही महत्व हैं। व्याख्या सिद्धांत को मानने वाले विद्वानों के अनुसार अनुवाद मात्र अर्थ संप्रेषण नहीं बल्कि व्याख्यात्मक होता हैं। किसी एक भाषा को भाषिक प्रतिकों की व्याख्या दूसरे भाषिक प्रतिकों में करना ही अनुवाद हैं। व्याख्या सिद्धांत के समर्थक विद्वानों में डी जी रोजेड़ी ,नइडा वे जेम्स होम्स आदि विद्वानों का नाम सर्वप्रथम लिया जाता हैं। होम्स के अनुसार अनुवाद आलोचनात्मक व्याख्या है हैं।इसी मत के समर्थक विद्वान नाइडा का मत भी यही है कि अनुवाद में कहीं न कहीं व्याख्या की जरूरत पड़ती है हैं।अतः अनुवाद व्याख्यात्मक टिप्पणी हैं। स्रोत भाषा के

सभी शब्दों का अर्थ निकाला नहीं जा सकता। सामाजिक, सांस्कृतिक परंपराओं धर्म और संस्कारों से जुड़े शब्दों का अनुवाद नहीं हो सकता। संकल्पना मूलक शब्दों का अर्थ देने से अनुवाद नहीं हो सकता।उसे व्याख्या द्वारा ही संप्रेषित किया जा सकता हैं। मुहावरे, लोकोक्तियां, व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, अलंकारिक शब्दों को व्याख्या के द्वारा ही समझाया जा सकता हैं। सिर्फ अर्थ देने से अनुवाद संपन्न नहीं होता। भारतीय साहित्य के संस्कृत ग्रथों में लिखे भाष्य इस कोठी में आते हैं ।कभी-कभी अनुवाद पाठक के बौद्धिक स्तर को दृष्टि में रखकर करना होता है।इसलिए भी अनुवाद में कठिन शब्दों को सरल व्याख्या द्वारा सुगम बनाया जाता हैं। अतः अनुवाद बिना व्याख्या संपन्न हो ही नहीं सकती। 6

अनुवाद प्रक्रिया के सैध्दांतिक विवेचन में प्रभाव क्षमता को भी ध्यान में रखा जाता हैं। काव्य या ललित साहित्य का अनुवाद करते समय उसी भाषा की शैली व अभिव्यक्ति की भाव गरिमा स्तोत्र भाषा की तरह संप्रेषित होनी चाहिए तभी लक्ष्य भाषा के पाठकों पर वही प्रभाव पड़ेगा जो सूत्र भाषा के पाठकों ने अनुभव किया था।अतःअनुवाद दोनों भाषाओं में समान प्रभाव में संप्रेषित हो जाना चाहिए। पाठकों को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का अनुभव एक समान हो, मूल भाषा की सामग्री जिस रुचि से पाठक पढ़ता है, उसी रुचि से अनुचित सामग्री भी पढ़ी जाए तभी अनुवाद में प्रभाव समता संप्रेषित हो जाएगी। अनुवाद किसी एक भाषा के कथन के अर्थ और प्रभाव दूसरी भाषा में वही अर्थ के साथ प्रस्तुत होता हैं। और यही प्रस्तुति मूल भाषा की तरह लक्ष्य भाषा में दिखाई देती हैं ।तभी अनुवाद सफल माना जाता हैं।अनुवाद समान भाषांतरण की प्रक्रिया हैं। इसमें अनुवादक को अपनी प्रतिभा, ज्ञान, अनुभव और कल्पना से सुनिश्चित करना होता है कि अनूदित सामग्री प्रभाव के मामले में मूल पाठ जैसी ही बने। इसके लिए कभी-कभी अनुवादों को अनुदित पाठ में कल्पना के सारे कुछ जोड़ना, रचना होता है। क्योंकि अनुवाद में सृजन का अनुसृजन न हो ।

सांस्कृतिक ऐक्य के बारे में अनुवाद को जानना हो तो यह केवल दो भाषाओं के बीच का माध्यम नहीं हैं। दो सामाजिक और दो संस्कृतियों के बीच ऐक्य का कार्य करता हैं। अनुवादक एक सेतु की तरह दो संस्कृति के

सामाजिक किनारो को जोड़ने का काम करता हैं ।हम बहुभाषी लोग एक दूसरे समाज से उनकी संस्कृति से परिचित होना चाहते हैं। अनुवाद के माध्यम से संभव हो गया हैं ।विश्व के हर परिवेश से हम वाकिब हो गए हैं। दुनिया के कोने-कोने की संस्कृति हम जानने लगे हैं ।अनुवाद के कारण दो समाज, दो संस्कृतियाँ एक सूत्र में बंधी हुई हैं।अगर अनुवाद विधा का जन्म नहीं होता तो अन्य संस्कृति से हम अनभिज्ञ रह जाते। लोक कला, रीति रिवाज,परिवेश, रहन-सहन ग्रहन कर आदि के बारे में अनुवाद के कारण विश्व के हर कोने को हम जानने लगेहैं। अनुवाद ही है जो दो संस्कृतियों के बीच ऐक्य का निर्माण कर सकता हैं। इसी दृष्टिकोण के कारण समाजशास्त्रियों ने अनुवाद के सांस्कृतिक ऐक्य को सैद्धांतिक रूप से प्रतिपादित किया हैं।

अनुवाद में अर्थ तत्व की प्रधानता होती हैं। इस सिद्धांत को मानने वाले यह मानते है कि अनुवाद अर्थ के संप्रेषण की क्रिया हैं। अर्थात मुल भाषा स्तोत्र भाषा के शब्दों के अर्थ लक्ष्य भाषा में संप्रेषित किए जाते हैं।अर्थ का आशय हैं ,शब्दों के सीमित अर्थ तक ही सीमित नहीं बल्कि इसमें विभिन्न अर्थो जैसे व्यंजन ,व्यंग, लक्षण ,आदि अर्थों को भी अनुवाद के अर्थ संप्रेषण में शामिल किया जाना चाहिए ।अर्थ संप्रेषण के अंतर्गत सिर्फ संकेत ही नहीं तो संरचना, प्रयोग,सह-प्रयोग आदि के प्रयोग को ही अनुवाद संपन्न होता हैं। अनुवाद प्रक्रिया में अर्थ ग्रहण और अर्थ संप्रेषण हो तो ही क्रियाएं महत्वपूर्ण होती हैं। बाकी क्रियाएँ गौण होती हैं ।दो या अधिक बहुभाषियों के बीच भाषा संप्रेषण का माध्यम होती हैं।एक भाषा के भावों, विचारों की अभिव्यक्ति दूसरी भाषा समुदाय तक पहुंचाने के लिए दोनों समुदाय के मध्य एक संबध स्थापित होना जरूरी होता है हैं,और यह संबंध अनुवाद के माध्यम से संभव हो जाता हैं। अनुवाद का मूल उद्देश्य स्तोत्र भाषा के कथ्य और संदेश लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करना हैं। अनुवाद करते समय मूल भाषा के भावों में या कथ्य में कोई परिवर्तन न आए।

सैमुअल जॉनसन ने इस विषय में अपनी परिभाषा दि हैं," To translate is to change into another language retaining the sense।" इस परिभाषा के अनुसार एक भाषा में कही गई बातें दूसरी भाषा में संप्रेषित करना तथा

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इसमें भाव (sense)को कायम (retain)रखना ही अनुवाद हैं।और यही भावों को वैसे के वैसे संप्रेषित करना अनुवाद का काम होता हैं। 7

मूल भाषा का सौंदर्य, मूल्य का अर्थ परिवर्तित ना करके दूसरी भाषा में उसी भावों के साथ ले जाना अनुवादक के लिए 'मैलों का पत्थर' जैसा होता हैं। और संप्रेषण के माध्यम में तो इन भावों को या सामग्री पर अधिक ध्यान देकर अनुवाद करना होता हैं, क्योंकि मूल भाषा का सौंदर्य या मूल्य कम ना हो और गलत अर्थों से उसका संप्रेषण ना हो। नहीं तो मूल सामग्री का अर्थ ही बदल जाएगा।

अनुवाद विज्ञान में पुर्नकुंटाकन सिद्धांत को भी महत्व दिया जाता हैं। अनुवाद के इस विषय के सिद्धांत के प्रवर्तक विलियम फ्राउले ने अनुवाद के संबंध में इस मान्यता को बल दिया है, कि स्रोत भाषा के कुटों का विश्लेषण करके नए कुट के माध्यम से स्रोत भाषा में काव्य कासंप्रेषणकियाजाता हैं।इसलिए अनुवादक कूटविश्लेषण, पुर्नकुंटाकन अथवा कूट करण की प्रक्रिया को अपनाता हैं। इसलिए एक कुट में उपलब्ध सूचनाओं को दूसरे कुट में बदलकर इन दोनों कुटों में तालमेल बैठाकर अनुवाद किया जाता हैं। अतः पुर्नकुंटाकनकी प्रक्रिया अनुवाद के साथ सतत चलती रहती हैं। इसलिए पुर्नकुंटाकन का भी इस क्षेत्र में अत्यंत महत्व रहा हैं। 8

अनुवाद में स्तोत्र भाषा और लक्ष्य भाषा का अलग-अलग डाटा मैट्रिक्स बना लिया जाए तो आंकड़ों अथवा अंकों के माध्यम से भाषा के शब्दों में और उनके अर्थों में समरूपता लाई जा सकती हैं।एक भाषा के कोड दूसरी भाषा के कोड से संबंध बनाकर पुनः दूसरे भाषा कोड की भाषिक संरचना में बदलना पुर्नकुंटाकन या पुनः कोडी कारण कहलाता हैं।कंप्यूटर के माध्यम से किया जाने वाला मशीन अनुवाद इस सिद्धांत पर आधारित हैं।अनुवाद विज्ञान में पुनर्सुजन को भी महत्व दिया जाता हैं। साहित्य को यदि सृजन कहा जाता हैं तो अनुवाद भी दो भाषाओं को सृजित करके ही नया कुछ बनाकर पाठकों को समर्पित करता हैं। परंतु अनुवाद

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की सीमा यह है कि अनुवादक पहले किए हुए किसी साहित्य को दूसरी भाषा में पुनःसृचित करता हैं अतः अनुवाद को सृजन नहीं कहा जा सकता हो तो पुनःसृजन तो कहा ही जा सकता हैं।

इसके अलावा अनुवाद के सैद्धांतिक विवेचन में अनुवाद की सहजता, निकटता,समीपता, अनुकृति,औचित्य, प्रसंग का अनुकूलता, शैली आदि चीजों को ध्यान में रखकर अनुवाद को सफल बनाने का प्रयास किया जाता है

निष्कर्ष: भाषा किसी भी दो या बहुभाषियों के बीच संप्रेषण का काम करती हैं। अनुवाद और भाषा विज्ञान के संबंधों को रेखाकिंत की करते समय यह ध्यान देना चाहिए की भाषा विज्ञान और अनुवाद का संबंध अनुवाद के सिद्धांतों से स्थापित होता हैं। जिस प्रकार कोई वक्ता, लेखक व्याकरण के ज्ञान बिना अच्छा भाषण दे सकता हैं या लेखक अच्छी तरह का मौलिक लेखन कर सकता हैं। उसी प्रकार एक अनुवादक को अनुवाद के सिद्धांतों का ध्यान होना बहुत जरूरी हैं। सिद्धांतों के बिना जाने अनुवाद करना संभव ही नहीं बल्कि पूर्ण रूप से गलत ही होगा अनुवाद एक व्यवहार ही होता हैं। और इस व्यवहार में रहकर अनुवादक को अपने अभ्यास से, अटल परिश्रम से अच्छा अनुवादक बनने का प्रयास करना होता हैं।अनुवाद के सम्यक रूप को जानने के लिए किसी भी व्यक्ति को उनके सिद्धांतों को जानना अति आवश्यक हैं ।उपर्युक्त संदर्भ से यह स्पष्ट हो जाएगा कि अनुवाद का स्वरूप और अनुवाद एक विवेचन काफी मात्रा में प्रस्तुत हो गया होगा।

संदर्भ सुचि:-–

1. अनुवाद क्या हैं? सं. डॉ.राजमल बोरा-वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ नं-28

2.वही, पृष्ठ नं-15

3.अनुवाद चिंतन डॉ.अर्जुन चव्हाण-अमन प्रकाशन कानपूर, पृष्ठ नं -65

4.प्रयोजनमूलक हिन्दी अधुनातन आयाम-डॉ. अम्बादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन,कानपूर, पृष्ठ नं-497

5.इंटरनेट

6.प्रयोजनमूलक हिन्दी अधुनातन आयाम-डाॅ. अम्बादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन,कानपूर, पृष्ठ नं-498

7.इंटरनेट

8.प्रयोजनमूलक हिन्दी अधुनातन आयाम-डाॅ. अम्बादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन,कानपूर, पृष्ठ नं-499